विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 1 अंक: 4 दिसंबर, 2008

इंद्रधनुष की बीसवीं वर्षगांठ पर समारोह

श्वेता प्रयाग

श्री कुँवर नारायण

बधाई
वरिष्ठ हिंदी कवि कुँवर नारायण को
ज्ञानपीठ पुरस्कार

वर्ष 2005 के लिए 41 वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार वरिष्ठ हिंदी कवि श्री कुँवर नारायण को प्रदान किया जाएगा । यह निर्णय प्रसिद्ध ओड़िया साहित्यकार, ज्ञानपीठ विजेता डॉ. सीताकांत महापात्र की अध्यक्षता में हुई ज्ञानपीठ चयन समिति की बैठक में लिया गया । चयन समिति की इस बैठक में प्रो. मैनेजर पांडेय, डॉ. के. सच्चिदानंदन, श्री दिनेश मिश्र, प्रो. गोपीचंद नारंग, श्री विभूति नारायण राय, श्री केशुभाई देसाई और श्री रवींद्र कालिया उपस्थित थे ।

1927 में जन्मे श्री कुँवर नारायण पिछले कई दशकों से हिंदी कविता के शलाका पुरुष हैं । 'नयी कविता' आंदोलन के सशक्त कवि श्री कुँवर नारायण, अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सतक'(1959) के प्रमुख कवियों में रहे हैं । हिंदी में संभवत: सर्वाधिक पढ़े जानेवाले श्री कुँवर नारायण ने अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के प्रिज़्म की मार्फत वर्तमान को देखा परखा है । इससे पूर्व श्री कुँवर नारायण को हिंदुस्तानी अकादमी पुरस्कार तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है ।

श्री कुँवर नारायण को विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से बधाई।

भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति द्वारा श्री प्रह्लाद रामशरण की पुस्तकों का लोकार्पण

इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद, मॉरीशस की साहित्यिक पत्रिका 'इंद्रधनुष' की बीसवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में परिषद ने आर्य सभा मॉरीशस, हिंदी प्रचारिणी सभा, ह्यूमन सर्विस ट्रस्ट एवं हिंदी संगठन के सहयोग से बो बासें नगर में स्थित आर्य समाज मंदिर के परिसर में तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 21 -23 नवंबर, 2008 को किया ।

21 नवंबर को सायं पाँच बजे सांसद सचिव, माननीया कल्यानी जग्गू ने सभागार में प्रवेश करते समय इस अवसर पर आयोजित एक ऐतिहासिक प्रदर्शनी का उद्घाटन अपने कर कमलों से फीता काटकर किया । इस प्रदर्शनी में 1923 से 2008 तक के स्थानीय हिंदी लेखकों के साढ़े तीन सौ ग्रंथ, यहाँ के हिंदी सेवियों एवं साहित्यकारों के डेढ़ सौ चित्र और तीन दर्जन चुने हुए हस्ताक्षरों के हस्तलिखित नमूने प्रदर्शित थे । इसके बाद डॉ. शकुंतला बुलेल, प्रह्लाद रामशरण और मुख्य अतिथि, मान. कल्यानी जग्गू के भाषण हुए । इसी अवसर पर उन्होंने परिषद के तीन निष्ठावान सदस्यों को शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया । उसके उपरांत परिषद के तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ ।

22 नवंबर को पूर्वाह्न दस बजे भारत के उच्चायुक्त महामहिम मधुसूदन गणपति तथा स्थानीय हिंदी एवं फ्रेंच के मूर्धन्य विद्वानों, जिनमें डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, डॉ. उदयनारायण गंगू, श्री अजामिल माताबदल, श्री राजेंद्र अरुण, इवान मार्शियल, मारी फ्रांस सेलें गोबले, श्री ब्रीजेन बरन, डॉ.विनोद बाला अरुण, डॉ. वी. जी. कुंजल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, श्री सत्यदेव प्रीतम आदि की

समारोह के दौरान लगाई गई भव्य प्रदर्शनी से महामहिम उच्चायुक्त को अवगत कराते हुए श्री प्रह्लाद रामशरण

उपस्थिति में कार्यक्रम प्रारंभ हुआ ।

परिषद के उप प्रधान श्री ज्ञानदत्त गोपी ने स्वागत भाषण में परिषद के बीस वर्षों के उज्ज्वल कार्यों का उल्लेख करते हुए प्रह्लाद रामशरण के शोध कार्यों पर प्रकाश डाला जिसके फलस्वरूप इंद्रधनुष के 'जॉन दे लिंगन ' विशेषांक और हिंदुत्व पर उनके एक ग्रंथ का प्रकाशन सम्भव हो पाया है । श्री प्रहलाद रामशरण ने कहा कि जिस अंग्रेज कवि ने अपने मॉरीशस प्रवास काल (1921 से 1942) में आधे दर्जन ग्रंथ लिखकर स्थानीय साहित्य को समृद्ध किया था और जिन्होंने हिंदुत्व पर दो अद्भुत ग्रथ लिखे थे, उन पर विशेषांक निकालकर हमने उनका उचित सम्मान किया है । डॉ. एम. चिंतामणि ने 'प्रह्लाद रामशरण साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहासवेत्ता ' नामक पुस्तक पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह ग्रंथ डॉ. राजेंद्रसिंह कुशवाह और डॉ. भवानीलाल भारतीय द्वारा श्री रामशरण की सत्तरवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया गया है । महामहिम मधुसूदन गणपति ने अपने वक्तव्य में परिषद के तीन दिवसीय कार्यों की सराहना की। उन्होंने प्रह्लाद रामशरण की साहित्यिक गतिविधियों की भूरि-भरि प्रशंसा की । अंत में भारतीय उच्चायुक्त महोदय ने दोनों पुस्तकों एवं इंद्रधनुष के 'जॉन दे लिंगन विशेषांक का लोर्कापण किया ।

22 नवंबर को अपराह्न डेढ़ बजे दिन में माननीय सुरेंद्र दयाल, मुख्य अतिथि और अजामिल माताबदल की अध्यक्षता में क्रियात्मक लेखन संगोष्ठी संपन्न हुई । इसमें सर्वश्री अजामिल माताबदल, प्रह्लाद रामशरण, मान. सुरेंद्र दयाल, रामदेव धुरंधर, डॉ. लालदेव अंचराज, डॉ. हेमराज सुंदर तथा डॉ. उदयनारायण गंगू आदि ने बारी-बारी से क्रियात्मक लेखन के विभिन्न पहलुओं पर अपने-अपने विचार प्रकट किए। अंत में अध्यक्ष महोदय ने दो प्रस्ताव पारित करके संगोष्ठी का समापन किया ।

23 नवंबर, 2008 को पूर्वाह्न दस बजे महापैर रामालिंगम मेस्त्री, मुख्य अतिथि और न्यूज अव संडे के प्रधान संपादक सोभानंद सिपर्साद की अध्यक्षता में श्री सत्यदेव प्रीतम (प्रधान आर्य सभा) ने स्वागत भाषण में मॉरीशस के लगभग ढाई सौ वर्षों के फ्रेंच-अंग्रेजी पत्रकारिता के इतिहास का सर्वेक्षण किया । तदुपरांत प्रह्लाद रामशरण ने हिंदी पत्रकारिता के इतिहास पर टिप्पणी की । इसके बाद महापौर रामालिंगम मेस्त्री, इवान मार्शियल, डॉ. सरिता बुधु आदि विद्वानों ने इस विषय पर अपने-अपने विचार रखे ।

संगोष्ठी के समापन से पहले एकाएक हैदराबाद की राजकुमारी साहिबा इंदिरा देवी जी का आगमन हुआ । प्रह्लाद रामशरण ने अध्यक्ष महोदय से प्रश्नोत्तर कार्य को अंतिम सत्र के लिए स्थगित करने का निवेदन किया । उन्होंने राजकुमारी और उनके कवि पति का संक्षिप्त परिचय दिया । इसके बाद राजकुमारी ने मधुर स्वर में सबको हिंदी पढ़ते रहने को कहा । उन्होंने परिषद के कार्यों की सराहना की । उन्होंने कहा कि इंद्रधनुष का हिंदी, अंग्रेजी और फ्रेंच में प्रकाशित होना, तीन संस्कृतियों के संगम जैसा है और इसे बनाये रखना है ।

23 नवंबर को डेढ़ बजे दिन में श्री प्रह्लाद रामशरण की अध्यक्षता में पत्रकारिता पर समापन सत्र हुआ । इसमें कालक्रम से प्रभा दशरथ, केशवदत्त चिंतामणि, उमा देवी रोशन, देवदत्त वृजमोहन, प्रेमदत्त मंगर आदि महानुभावों ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से उक्त विषय पर अपने-अपने विचार रखे । सभी वक्ताओं को सुनने के बाद अध्यक्ष ने कुछ प्रस्ताव पारित करते हुए संगोष्ठी का समापन किया ।

21.10.2008

आदरणीय प्रधान संपादक जी,

नमन ।

मुझे नहीं ज्ञात कि आप उम्र में मुझसे छोटी हैं या बड़ी पर विश्व हिंदी समाचार के रूप में हिंदी प्रेमियों को आपने जो उपहार दिया है वह सचमुच बहुत बड़ा है और उसके लिए नमस्कार शब्द शायद मेरी भावनाओं व उद्‌गारों को पूरी तरह आप तक न पहुँचा पाये पर नमन सर्वोत्कृष्ट व सर्वाधिक उपयुक्त है, अतः वही स्वीकार लें ।

मेल बाक्स खोलने पर मॉरीशस से पहुँचा विश्व हिंदी समाचार का द्वितीय अंक मुझे पत्रिका नहीं पाती के समान प्रतीत हुआ । कतिपय आप विश्वास न करें कि मेरे दैनिक जीवन के क्रम में पहली बार ऐसा हुआ कि मैंने अपनी दूसरी डाक देखी ही नहीं और इस नई नवेली पत्रिका को लेकर सीधा अपने बैडरूम में रजाई में जाकर दुबक गया और पूरी पत्रिका पढ़ लेने के उपरांत ही नीचे उतरा । पत्नी ने शिकायत की कि मैंने आपके लिए पाव-भाजी गर्म करके रखी थी, आप कहाँ चले गए थे ? मेरा छोटा सा जवाब था--जिसे खीर खाने को मिल रही हो वह पाव भाजी भला क्योंकर खायेगा ।

यह पत्रिका तमाम विश्व में हिंदी विकास का एक नया मंत्र फूंकेगी यह तो सुनिश्चित है ही, अंग्रेजी व फ्रेंच भाषाओं के स्तर को टक्कर देती यह पत्रिका उन्हें भी करारा जवाब देगी जिनका मानना है कि हिंदी की पत्रिकाएँ तो केवल न्यूज़प्रिंट कागज पर ही छप सकती हैं ।

सुंदर कलेवर, आँखों को भाता रंग-संयोजन और गागर में सागर भरती हिंदी भाषा के विकास से गुंथी सूचनाओं को हिंदी प्रेमियों तक पहुँचाती यह पत्रिका 12 पन्नों से 112 पन्नों और 212 पन्नों तक की छलांगे कितनी जल्दी लगाती है, इस बात की उत्कट प्रतीक्षा है ।

पुनश्च अनेकानेक साधुवाद सहित ।

सरन घई, प्रोफेर हिंदी, टोरंटो विश्वविद्यालय, कनाडा

अजित कुमार को 'जयजयवंती' और आशकरण अटल को 'हास्य रत्न' सम्मान

8 अक्तूबर, 2008 को इंडिया हैबिटेट सेंटर में जयजयवंती साहित्य संगोष्ठी के संयुक्त तत्वावधान में 34वां काका हाथरसी पुरस्कार मुंबई के हास्य कवि श्री आशकरण अटल को प्रदान किया गया । पुरस्कार के रूप में उन्हें एक लाख रुपए का चैक, मानपत्र, श्रीफल और शॉल प्रदान किए गए । काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट के सचिव श्री अशोक गर्ग ने मानपत्र का वाचन करते हुए बताया कि श्री आशकरण अटल को ' हास्य रत्न ' की उपाधि से नवाज़ा जा रहा है । इसी कार्यक्रम में डायमंड पब्लिकेशंस के श्री नरेंद्र कुमार के सौजन्य से वरिष्ठ साहित्यकार श्री अजित कुमार को हिंदी सॉफ्टवेयर सुविधा से सज्जित एक लैपटॉप भेंट किया गया तथा 'जयजयवंती सम्मान ' से नवाज़ा गया ।

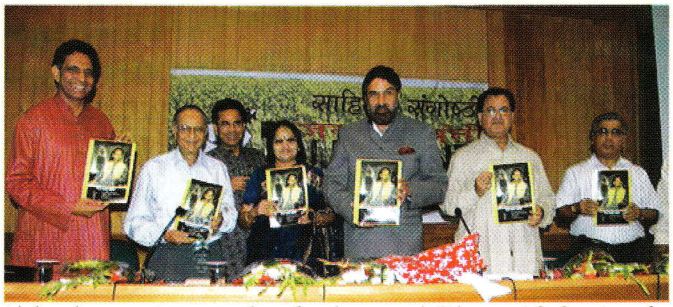

'ये हैं अशोक चक्रधर ' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए भारत के विदेश राज्यमंत्री श्री आनंद शर्मा । मंत्री जी के बाएं पुरस्कृत कवि श्री आशकरण अटल और दाएं श्री अजित कुमार

कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ. अशोक चक्रधर पिछले चौदह महीने से ' हिंदी का भविष्य और भविष्य की हिंदी ' शीर्षक से गोष्ठियां आयोजित करते आ रहे हैं । उनका लक्ष्य है कि हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार कंप्यूटर प्रयोग में दक्ष बन सकें ताकि नई पीढ़ी से उनका संवाद सशक्त हो तथा हिंदी साहित्य का व्यापक स्तर पर प्रचार और प्रसार हो ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने जहाँ एक ओर काका हाथरसी के हास्य चिंतन में गांधीवादी अवधारणाओं को रेखांकित किया, वहीं दूसरी ओर जयजयवंती के प्रयासों की सराहना की । समारोह में हिंदी के अनेक वरिष्ठ साहित्यकार तथा हास्य कवि उपस्थित थे यथा, डॉ. गंगा प्रसाद विमल, डॉ. ओम विकास, हॉलैंड के डॉ. मोहन कांत गौतम, हास्य कवि सुरेंद शर्मा, महेंद्र अजनबी,वेद प्रकाश, अरुण जैमिनी, डॉ. शेरजंग गर्ग, रवि-नलिनी जैन, पवन दीक्षित, डॉ. उदय प्रताप सिंह, डॉ. पद्माकर पांडेय आदि । इस मौके पर श्री चंचल चौहान को 'सुविधा ' हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज एवं शॉल से सम्मानित किया गया । डॉ. अशोक चक्रधर ने काका हाथरसी के व्यक्तित्व और कृतित्व से जुड़ी एक मल्टी-मीडिया प्रस्तुति दिखाई जिसका शीर्षक था -- हास्य की हाई ड्राइव: काका हाथरसी । पुरस्कृत कवि श्री आशकरण अटल की कविताओं को बहुत चाव से सुना गया ।

चित्र कला संगम के सचिव पद्मश्री वीरेंद्र प्रभाकर एवं डायमंड पब्लिकेशंस के सौजन्य से डॉ. अशोक चक्रधर के बारे में एक पुस्तिका का लोकार्पण भी हुआ । जिसका शीर्षक था - 'ये हैं अशोक चक्रधर '।

शब्दों का मनचाहा खजाना

उषा महाजन

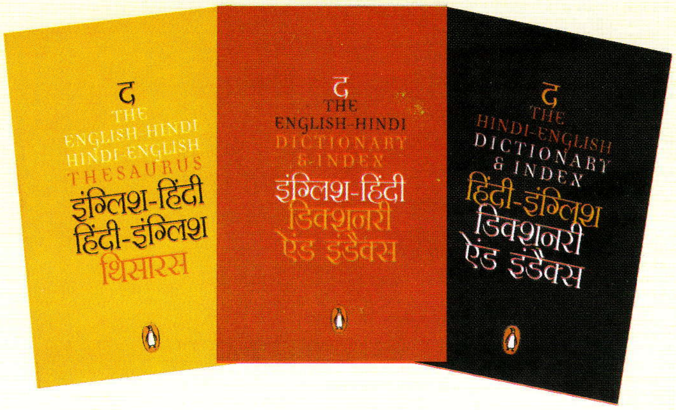

पिछले 24 वर्षों से अनुवाद-कार्य करते हुए, अच्छे शब्दकोशों का जो अभाव महसूस होता रहा है, वह अब जाकर पेंगुइन बुक्स द्वारा हाल ही में प्रकाशित, अरविंद कुमार और कुसुम कुमार के बीस बरसों की अथक साधना के प्रतिफल - 'पेंगुइन इंग्लिश-हिंदी, हिंदी-इंग्लिश थिसारस एंड डिक्शनरी' के तीन खंडों के सेट ने पूरा किया है ।

इससे पहले अंग्रेजी से हिंदी की डिक्शनरी में से अपने मतलब का सटीक अर्थ ढूंढ़ना एक टेढ़ी खीर थी । उसका पर्याय या मिलता-जुलता शब्द ढूँढ़ने के लिए खासा दिमाग लड़ाना पड़ता था । कभी - कभी एकाधिक शब्दकोशों को एक के बाद एक खंगालना पड़ता था ।

उपरोक्त डिक्शनरी और थिसारस ने तो अनुवादक के सामने जैसे शब्द - कुबेर का खजाना ही उड़ेल दिया हो । एक शब्द के इतने - इतने अर्थ और फिर नंबरवार दिए उन अर्थों के भी थिसारस में उन्हीं नंबरों से ढूंढ़ लीजिए, अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में अनेकानेक अर्थ और अभिव्यक्तियां ।

थिसारस वाले भाग में 988 शीर्षक या शब्द - समूह हैं, जिनके आगे 25562 उपशीर्षक हैं । कुल मिलाकर 5,48,330 अभिव्यक्तियां हैं, जिनमें 257853 अंग्रेजी की और 290477 हिंदी की हैं । इसमें दोनों भाषाओं के इतने पर्यायवाची और विपर्यायवाची शब्द हैं कि शायद ही कोई अर्थ, भाव या अभिव्यक्ति छूटी हो । शब्दों के इतने संदर्भ, परिभाषाएं, उदाहरण और नमूने दिए गए हैं कि पाठक दोनों भाषाओं के शब्दों के महीन से महीन अर्थ और छवियां पकड़ने में सक्षम हो जाता है ।

(साभार: अक्षरम् संगोष्ठी, अप्रैल - जून, 2008)

महासचिव की ओर से

हिंदी की विश्व-यात्रा और हम

विश्व हिंदी समाचार के इस अंक के माध्यम से हम अपने सभी सुधी पाठकों को नव वर्ष और संक्रांति का हार्दिक अभिनंदन समर्पित कर रहे हैं ।

वर्ष 2009 की शुरुआत ' प्रवासी भारतीय दिवस ' और ' विश्व हिंदी दिवस' जैसे दो बड़े उपयुक्त और प्रेरक आयोजनों से हो रही है ।

'प्रवासी भारतीय दिवस ' सन् 2003 से प्रतिवर्ष 9-11 जनवरी को भारत में मनाया जाता है । 9 जनवरी का दिन ऐतिहासिक दृष्टि से भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि सन् 1915 में इसी दिन महात्मा गाँधी लगभग 20 वर्षों के लंबे प्रवास के बाद दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे और उन्होंने भारतीय जन-जागरण का संकल्प लिया था । कालांतर में गाँधी जी हिंदी के प्रबल प्रचारक बने और उन्होंने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का प्रयोग जनभाषा के रूप में किया । हिंदी का सरल सहज प्रयोग करके उन्होंने हिंदी को आसेतु हिमाचल की भौगोलिक सीमा तक विस्तृत और प्रिय बना दिया । गुजराती भाषी होते हुए भी महात्मा गाँधी हिंदी के पर्याय बन गए।

'विश्व हिंदी दिवस ' का आयोजन हम प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में करते हैं । प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन भारत के नागपुर नगर में सन् 1975 में 10 से 14 जनवरी को आयोजित किया गया था । इसीलिए प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व भर के हिंदी प्रेमी 'विश्व हिंदी दिवस ' मनाकर प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रथम मंतव्य 'संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए' को यथार्थ में परिणत करने के प्रयत्न को और अधिक प्रभावी करते हैं।

आज जब हम जनवरी, 2009 में 'विश्व हिंदी दिवस ' और 'प्रवासी भारतीय दिवस ' मनाने की तैयारी कर रहे हैं, तब हमें यह विचार करना होगा कि हिंदी के वैश्विक विकास में हमारी पीढ़ी का क्या योगदान हो सकता है ।

वर्तमान पीढ़ी का सदैव यह दायित्व रहा है कि वह आनेवाली पीढ़ी को भाषा और संस्कृति की अमृत धरोहर सौंपे । इस दृष्टि से हमारा कर्तव्य बहुत गंभीर बन जाता है । हम सभी मानते हैं कि भाषा खोकर हम संस्कृति को नहीं बचा सकते और संस्कृति को खोकर हम अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकते । इस प्रकार भाषा केंद्र में है । किसी भी समाज का रथ भाषा की धुरी को सुदृढ़ बनाये बिना कालजयी दिग्विजय -यात्रा नहीं कर सकता ।

विश्व हिंदी सचिवालय इसे एक शुभ संदेश मानता है कि विश्व भर में फैले हिंदी भाषी अपने-अपने देशों में ' विश्व हिंदी दिवस' मना रहे हैं और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए चिंतन-मनन कर रहे हैं । इस दृष्टि से 'प्रवासी भारतीय दिवस ' भी अत्यंत महत्वपूर्ण है । इसमें भाग लेने विश्व के अनेक देशों में रहनेवाले प्रवासी भारतीय आते हैं और अनेक सत्रों में विचारों का आदान-प्रदान करके सार्थक निष्कर्ष निकालते हैं जो उनके उत्कर्ष के लिए दिशा निर्देश करते हैं।

इस सम्मेलन में प्रायः आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य, औद्योगिक विकास, विज्ञान, तकनीकी और पर्यटन जैसे विषयों के साथ ही साथ कोई न कोई सत्र भाषा-संस्कृति और शिक्षा पर भी होता है । 2009 के सम्मेलन में भी भाषा और संस्कृति को एक सत्र समर्पित किया गया है । इसमें विचार-विमर्श करके विद्वान और भाषा-सेवी इस सम्मेलन को भाषा की प्रगति का प्रभावी मंच बना सकते हैं और भाषा की प्रतिष्ठा के अभियान को और अधिक गतिमान कर सकते हैं । सभी हिंदी जन एक मन से एक मिशन के रूप में हिंदी को विश्व भाषा बनाने का संकल्प ले सकते हैं ।

यह हमारे लिए गौरव की बात है कि विश्व भर में फैला हिंदी परिवार बहुत विशाल और विराट है । हिंदी विश्व के लगभग 137 देशों में विद्यमान है । एक आधुनिक भाषा के रूप में हिंदी में सभी विधाओं में लेखन हो रहा है । सृजनात्मक लेखन के साथ ही साथ विज्ञान, औषधि, प्रविधि, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र आदि सभी विषयों पर गंभीर और ठोस कार्य हो रहा है । इस विश्वव्यापी हिंदी परिवार की समृद्धि को हमें शक्ति के रूप में विकसित करना है ।

मेरा निवेदन है कि हिंदी के भाषागत विकास के अध्ययन में संलग्न विद्वान विभिन्न भाषाओं की प्रकृति को ध्यान में रखकर हिंदी के साथ उनका ताल-मेल बैठाने के उपाय खोजें जिससे हिंदी की ग्रहण-शक्ति बढ़े और हिंदी एक उदार अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो सके । नव वर्ष हमें इस दिशा में अग्रसर कर सके, यही कामना है ।

संपादकीय

विश्व हिंदी दिवस धूमधाम से मनाएं

विश्व हिंदी समाचार का दिसंबर, 2008 में प्रकाशित यह चौथा त्रैमासिक अंक इस बात की ओर संकेत कर रहा है कि वर्ष 2008 बीतनेवाला है और वर्ष 2009 आने की तैयारी में है । जनवरी हिंदी प्रेमियों के लिए एक ऐतिहासिक महीना है । इसी महीने की 10 तारीख को सन् 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का शुभारंभ नागपुर, भारत में हुआ था । इस सम्मेलन का उद्‌घाटन भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया था और इसकी अध्यक्षता की थी मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने । हिंदी के इस ऐतिहासिक दिवस को याद रखने तथा पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने सन् 2006 में यह निर्णय लिया था कि 10 जनवरी पूरे विश्व में 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाएगा । आइए, इस महत्वपूर्ण निर्णय को उचित सम्मान देते हुए पिछले वर्ष कि तरह इस वर्ष भी विश्व हिंदी दिवस धूमधाम से मनाएँ ।

वर्ष 2008 में विश्व भर में हिंदी दिवस मनाए जाने को लेकर असंख्य हिंदी प्रेमियों तथा स्वयं सेवी हिंदी संस्थाओं में काफी उत्साह देखने को मिला है । इस दिशा में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के विश्वव्यापी मिशनों एवं दूतावासों ने भी स्वयं अथवा स्थानीय हिंदीसेवी संस्थाओं के सक्रिय सहयोग से 'विश्व हिंदी दिवस ' बड़े धूमधाम से मनाया । हमें प्राप्त सूचना के अनुसार विश्व हिंदी सचिवालय के अलावा; भारतीय उच्चायोग, लंदन; भारतीय उच्चायोग, जमैका; हिंदी क्लब, जमैका; हिंदी संघ, दक्षिण अफ्रीका; भारत राजदूतावास, उक्रेन; हिंदी समिति, केन्या; हिंदी समाज, सिडनी; हिंदी सोसाइटी, सिंगापुर; हिंदी प्रचारिणी सभा, कनाडा; हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा; अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, अमरीका; हिंदी समिति, यू.के. आदि सैकड़ों संस्थाओं ने अपने-अपने ढंग से ' विश्व हिंदी दिवस ' मनाया। अब तो यह दिन विश्व के कोने-कोने में बसे हिंदी प्रेमियों को एक-दूसरे से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण दिवस बनता जा रहा है । आशा है, आनेवाले वर्ष में भी 'विश्व हिंदी दिवस ' का आयोजन और भी व्यापक स्तर पर होगा ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसे आयोजनों में स्थानीय हिंदी सेवियों को सादर आमंत्रित करके सम्मानित भी किया जा सके तो वे भी हिंदी के इस अभियान में साथ और सहयोग देने से पीछे नहीं हटेंगे । हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम विश्व के अधिक से अधिक देशों को हिंदी के इस वैश्विक अभियान में अपने साथ लेकर चलें ।

इस समय विश्व भर में हिंदी का अनुकूल वातावरण बनता जा रहा है । कई दृष्टियों से विश्व के अधिकांश राष्ट्र हिंदी भाषा और संस्कृति का महत्व समझने लगे हैं । उनकी समझ में यह बात आने लगी है कि अब हिंदी भाषा को छोड़कर किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना आसान नहीं है । वह क्षेत्र चाहे राजनैतिक हो या आर्थिक अथवा सामरिक । निश्चित ही यह हिंदी के लिए एक शुभ संकेत है ।

विश्व हिंदी सचिवालय सभी हिंदी प्रेमियों एवं संस्थाओं से यह अनुरोध करता है कि वे 10 जनवरी, 2009 को 'विश्व हिंदी दिवस ' का आयोजन खूब धूमधाम से करें । इसमें अधिक से अधिक लोगों को शामिल करने का प्रयास करें और स्थानीय हिंदी प्रेमी नागरिकों को हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति के माध्यम से हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य से परिचित कराने की चेष्टा करें ताकि समय आने पर वे भी आगे बढ़कर हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने में खुलकर समर्थन प्रदान कर सकें।

समस्त हिंदी प्रेमियों को नववर्ष : 2009
एवं
'विश्व हिंदी दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएं ।

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक
डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण
संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu / dsgwhs@intnet.mu

विश्व में हिंदी की स्वयंसेवी संस्थाएं :

जितेंद्र कुमार मित्तल

विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के सामने सबसे बड़ी समस्या अपनी संस्कृति तथा भाषा को सुरक्षित बनाये रखने की है । स्कूल, कॉलेज, पड़ोस तथा दैनिक जीवन में उनके बच्चों को सतत एक विदेशी सभ्यता तथा भाषा के सम्पर्क में रहना पड़ता है । अक्सर माता-पिता, दोनों ही नौकरी करते हैं, ऐसे में बच्चों को घर पर भी वे संस्कार नहीं मिल पाते जो उनकी अपनी संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं । भाषा संस्कृति का वाहन है, अतः अगर उन्हें अपनी मातृभाषा पढ़ने की सुविधा उपलब्ध हो जाती है, तो वे विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से अपनी संस्कृति से संबंध बनाये रख सकते हैं । इसी बात को ध्यान में रखकर सिंगापुर की दो संस्थाए-हिंदी सोसाइटी तथा आर्यसमाज मन्दिर द्वारा संचालित डी.ए.वी. हिंदी स्कूल, अपने हिंदी केंद्रों के माध्यम से भावी पीढ़ी को हिंदी की विधिवत शिक्षा देने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं ।

हिंदी सोसाइटी, सिंगापुर

हिंदी सोसाइटी, सिंगापुर का पंजीकरण 4 अगस्त, 1990 को करवाया गया और उसके अगले दिन से ही इस संस्था ने अपनी हिंदी की कक्षाएं भी शुरू कर दीं, जो केवल 7 वीं

हिंदी सोसाइटी के अध्यक्ष श्री शिवकांत तिवारी के साथ उनके सहयोगी

कक्षा से 10 वीं कक्षा के छात्रों के लिए ही थीं । बाद में 25 मार्च, 1991 को सरकार ने 12 वीं कक्षा के छात्रों के लिए तथा 23 जुलाई, 1993 को पहली से छठी कक्षा तक के छात्रों के लिए हिंदी कक्षाएं चलाने की अनुमति दे दी ।

सोसाइटी को हिंदी पढ़ाने के लिए सरकार से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती । छुट्टी के दिन हिंदी की कक्षाएं चलाने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने सरकारी स्कूल की इमारतें जरूर उपलब्ध करायी हैं । सोसाइटी को हिंदी शिक्षकों की कमी महसूस नहीं हुई । इसका कारण यह है कि अनेक इंजीनियर,डाक्टर तथा अन्य क्षेत्रों में काम करनेवाले भारतीय सिंगापुर में आकर बस गये हैं । उनकी शिक्षित पत्नियों के सामने अपना खाली समय बिताने की समस्या थी । उन्हीं में से कुछ को इन कक्षाओं को चलाने के लिए योग्य शिक्षिकाओं के रूप में चुना गया है ।

हिंदी सोसाइटी के अध्यक्ष श्री शिवकांत तिवारी हमें बताते हैं कि द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़नेवाले छात्र किसी भी मायने में अपने चीनी, मलय अथवा तमिल सहपाठियों से पीछे नहीं हैं । पिछले दो साल से सोसाइटी प्री-प्राईमरी हिंदी कोर्स भी चला रही है, जिसका हिंदीभाषी लोगों ने पूरे उत्साह से स्वागत किया है । इसके अतिरिक्त वयस्कों को हिंदी पढ़ाने के लिए अलग से कक्षाएं चलायी जाती हैं । हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अनेक चीनी तथा मलय इन कक्षाओं में हिंदी पढ़ने आते हैं । अनेक भारतीय मूल के इंजीनियर डाक्टर आदि भी, जो यहां पैदा हुए हैं और जिन्हें हिंदी नहीं आती, यहां हिंदी सीखते हैं ।

हिंदी सोसाइटी एक वार्षिक पत्रिका 'साधना' का प्रकाशन भी करती है, जिसमें हिंदी पढ़नेवाले छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त शिक्षकों की रचनाएं भी प्रकाशित होती हैं । इस प्रकार यह पत्रिका अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों को हिंदी में सृजन करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है । संस्था का अपना एक नाट्य समूह भी है, जिसमें पूर्व तथा वर्तमान छात्रों के साथ-साथ सिंगापुर के अन्य हिंदीभाषी भी भाग लेते हैं । सिंगापुर में हर साल एक नाटक मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ मलय तथा चीनी भाषाओं के नाटकों का मंचन भी किया जाता है।

डी.ए.वी. हिंदी स्कूल, आर्य समाज, सिंगापुर

हिंदी को सरकारी मान्यता प्राप्त हो जाने के बाद आर्य समाज द्वारा संचालित डी. ए. वी. हिंदी स्कूल भी इस काम में पीछे नहीं रहा । स्कूल के सचिव श्री राजेश राय ने बताया कि इसके अंतर्गत आज हिंदी की 70 से अधिक कक्षाएं चलायी जाती हैं, जिनमें 60 के लगभग शिक्षक-शिक्षिकाएं अध्यापन कार्य कर रही हैं । आज इसकी विभिन्न कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 300 से बढ़कर 1800 तक पहुंच गयी है । हिंदी सोसाइटी की ही तरह यह संस्था भी अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन तो करती ही

डी.ए.वी. हिंदी स्कूल के सचिव श्री राजेश राय

है, साथ ही यह त्योहारों का सामूहिक आयोजन तथा विशेष अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है । इसकी वार्षिक पत्रिका का नाम है 'दृष्टि' तथा इसकी अपनी वेबसाइट (डीएवीहिंदीस्कूल.एडचू.एसजी) भी है ।

विश्व में हिंदी भाषा के प्रति बढ़ते हुए महत्व को ध्यान में रखते हुए हिंदी के विकास में हम हिंदी प्रेमियों को सिंगापुर की इन संस्थाओं के साथ मिलकर आगे बढ़ना होगा ।

हिंदी समाज, सिडनी

हिंदी समाज, सिडनी अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के ज़रिये पिछले कई दशकों से हिंदी के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है । यह एक अव्यावसायिक संस्था है । इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार करते हुए विश्व भर के भारतीय मूल के लोगों के बीच संपर्क-सूत्र स्थापित करना है ।

अपने इस महत् उद्देश्य को पूरा करने के लिए हिंदी समाज की ओर से न केवल बच्चों के लिए, बल्कि हिंदी सीखने के इच्छुक समस्त हिंदी प्रेमियों के लिए नियमित रूप से हिंदी कक्षाओं का आयोजन किया जाता हैं । सिडनी की स्थानीय प्रतिभाओं को साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ज़रिये उभारने के लिए समय-समय पर हिंदी काव्य-पाठ, हिंदी नाटक और लोक-नृत्य आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । हिंदी प्रेमियों में छिपी सृजनात्मकता को मंच प्रदान करने के लिए वार्षिक पत्रिका ' चेतना ' का प्रकाशन किया जाता है । हिंदी में हास्य नाटकों का मंचन एवं सामुदायिक रेडियों के माध्यम से सिडनी में उनका प्रसारण भी किया जाता है । लोगों में हिंदी पढ़ने के प्रति रुचि जगाए रखने के लिए हिंदी पुस्तकालय की भी स्थापना की गई है। इसके अलावा स्नातक स्तर पर हिंदी के अध्ययन के लिए सिडनी विश्वविद्यालय के एशियन स्टडीज़ विभाग से संपर्क रखा जाता है।

हिंदी समाज, सिडनी उन सभी हिंदी प्रेमियों व साहित्यकारों का सिडनी में हार्दिक स्वागत करता है और उन्हें हर संभव स्थानीय सुविधाएँ व संसाधन उपलब्ध कराता है जो सिडनी की यात्रा पर जाते हैं ।

यू. के. हिंदी समिति, यू.के.

पिछले 15 वर्षों से ब्रिटेन में सक्रिय यू.के. हिंदी समिति वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार का काम कर रही प्रमुख हिंदी संस्थाओं में से एक है । इसके अध्यक्ष डॉ. पद्मेश गुप्त छठे विश्व हिंदी सम्मेलन के सक्रिय सदस्य थे । यह संस्था अंतरराष्ट्रीय हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन करती है । पिछले 15 वर्षों से ब्रिटेन में हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित होनेवाले कवि सम्मेलनों का आयोजन इस संस्था द्वारा किया जाता है । इसके अतिरिक्त यह समय-समय पर भारत से आए वरिष्ठ साहित्यकारों और चिंतकों के सम्मान में गोष्ठियां आयोजित करती है । डॉ. उषा राजे सक्सेना, दिव्या माथुर और के.बी.एल. सक्सेना इस संस्था के प्रमुख पदाधिकारी हैं। यह संस्था त्रैमासिक 'पुरवई ' का प्रकाशन करती है । ●●

13.11.2008
नई दिल्ली

प्रिय राजेंद्र जी,

'विश्व हिंदी समाचार ' का अंक प्राप्त हुआं । धन्यवाद ।

विश्व हिंदी सचिवालय की यह पत्रिका विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में स्तुत्य प्रयास कर रही है । इससे विश्व में हिंदी संबंधी गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त होती है । प्रधान संपादक डॉ. विनोद बाला अरुण ने ' हिंदी दिवस: अस्मिता की स्मृति ' में हिंदी दिवस को याद करते हुए हिंदी की भूमिका, प्रासंगिकता और सार्थकता पर जो प्रकाश डाला, उससे हमारे भीतर हिंदी के प्रति जागरूकता बनी रहती है । आपके संपादकीय ' अब देर न करें ' में तो आपने हिंदी की व्यापकता और सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए जो आह्वान दिया है, वह वास्तव में आज के संदर्भ में प्रासंगिक है ।

हिंदी के इस अभियान के साथ-साथ मैं यह भी निवेदन करना चाहूँगा कि हिंदी संबंधी गतिविधियों के समाचार मात्र सर्जनात्मक साहित्य की गोष्ठियों तक सीमित न रखे जाएं वरन् विभिन्न कार्यक्षेत्रों और विषयों पर विशेषकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी में हो रहे कार्यों का भी लेखा-जोखा दिया जाए ताकि हिंदी का बहुमुखी, बहु-आयामी और बहु प्रयोजनी स्वरूप हिंदी प्रेमियों के समक्ष आ सके । इसी से विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की सार्थकता सिद्ध होगी और हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप स्पष्ट होगा । उ.प्र. हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ . शभुनाथ का वक्तव्य इसी आशय की ओर संकेत कर रहा है।
आशा है श्रीमती विनोद बाला अरुण के नेतृत्व में और आपके कुशल संपादन में यह समाचार बुलेटिन दिनोंदिन प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

शुभकामनाओं सहित ।

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

अमेरिका में हिंदी महोत्सव की धूम

हिंदी यू.एस.ए. द्वारा आयोजित 'हिंदी महोत्सव' का एक दृश्य

हिंदी यू.एस.ए. द्वारा अमेरिका के न्यू जर्सी राज्य के सोमरसेट नगर में फ्रैंकलिन हाई स्कूल के सभागार में दो दिवसीय सप्तम हिंदी महोत्सव का भव्य आयोजन 14-15 जून, 2008 को किया गया । आयोजन के पहले दिन लगभग 650 बच्चों ने हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। 1200 लोगों की क्षमतावाला फ्रैंकलिन हाई स्कूल का सभागार खचाखच भरा हुआ था । नृत्य, संगीत, अंताक्षरी, कविता पाठ, वाक्य प्रयोग, हनुमान चालीसा तथा रामायण चौपाई गायन इस प्रकार की भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताएँ देखकर दर्शक दाँतों तले उंगली दबाने को विवश थे । हिंदी यू.एस.ए. संस्था अमेरिका के अन्य प्रांतों तथा कनाडा में भी हिंदी के लगभग 25 विद्यालय चला रही है । इन विद्यालयों में लगभग 1200 बालक-बालिकाएँ साप्ताहिक कक्षा में आकर हिंदी सीखते हैं और वर्ष में एक बार आयोजित हिंदी महोत्सव में आकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं । इन कक्षाओं की एक और विशेषता का उल्लेख करना ज़रूरी है कि इन कक्षाओं में दक्षिण भारतीय राज्यों के बालक-बालिका भी उत्साह से भाग लेते हैं । अभी तक संपन्न 6 हिंदी महोत्सवों में भारत से बाबा रामदेव, श्रीमती किरण बेदी, श्री वेद प्रताप वैदिक, श्री नितिश भारद्वाज और लाफ्टर चैम्पियन राजू श्रीवास्तव अतिथि के रूप में आ चुके हैं । इसी प्रकार भारत के लोकप्रिय कवि श्री अशोक चक्रधर, हुल्लड़ मुरादाबादी, माणिक वर्मा, ओम व्यास, गजेन्द्र सोलंकी आदि काव्य पाठ कर चुके हैं ।

लगभग 7 वर्ष पूर्व एक युवा दंपत्ति देवेंद्र - रचिता सिंह द्वारा आरंभ किया गया यह हिंदी अभियान एक आंदोलन का रूप लेता जा रहा है । हिंदी महोत्सव में इस जन आंदोलन के भव्य रूप का दर्शन किया जा सकता है । हिंदी साहित्य के लगभग 15 स्टॉल लगाए गए थे । भारतीय व्यंजन उपलब्ध थे तथा दर्शक भी भारतीय वेशभूषा में समारोह में उपस्थित हुए थे । कुल मिलाकर एक रंग-बिरंगे मेले का रूप इस हिंदी के उत्सव ने ले लिया था । जितने लोग सभागार में उपस्थित थे उतने ही लोग बाहर मेले का आनंद ले रहे थे ।

मेले का दूसरा दिन विजेता बालकों को प्रवासी उद्योगपति श्री ब्रह्मरत्तन अग्रवाल और पूर्व एम्बेसेडर एट-लार्ज श्री भीष्म अग्निहोत्री द्वारा पुरस्कार वितरण से आरंभ हुआ । इस अनुष्ठान में लगभग 120 से अधिक हिंदी के अध्यापक -अध्यापिकाएँ जुड़े हैं । इन सब का सम्मान किया गया । प्रसन्नता की बात है कि इनमें से बहुत से अध्यापक-अध्यापिकाएँ दक्षिण भारतीय राज्यों से भी आते हैं । हिंदी यू.एस.ए. संस्था में कोई पद नहीं है, सभी स्वयंसेवक के रूप में कार्य करते हैं ।

लगभग 50 स्वयंसेवक दिन-रात मेहनत करके इस आयोजन को सफल करते हैं । इस अवसर पर श्री भूपेन्द्र मौर्य द्वारा संपादित 'कर्मभूमि ' नामक त्रैमासिक पत्रिका का लोकार्पण भी किया गया। हिंदी यू.एस.ए. की यह ई-पत्रिका हिंदी जगत में लोकप्रिय होती जा रही है । पत्रिका का पता है : karmbhoomi@HindiUSA.org HindiUSA3, Quay Circle, Sewell NJ ('कर्मभूमि ' से साभार) ●●

दिनांक 10.11.2008

संपादक महोदय,

विश्व हिंदी समाचार का अंक : 3 प्राप्त हुआ, हार्दिक आभार । आकर्षक कलेवर में प्रकाशित यह समाचार बुलेटिन विश्व-परिदृश्य में आयोजित कार्यक्रमों/गतिविधियों को उजागर करने के साथ ही सचिवालय के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों की पूरी सूचना देता है । वैश्विक हिंदी की आलोकमयी रश्मियों को वृहद-आयाम देने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे अभिनंदनीय हैं ।

महासचिव का वक्तव्य प्रेरणादायी है तथा संपादकीय यथार्थ बोध से अनुप्रेरित हो समवेत प्रयास के प्रति सजग होने का संकल्प दुहराता है । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'हिंदी चेतना ' और 'वसुधा ' जैसी पत्रिकाएं विश्व हिंदी साहित्य को मंच प्रदान करती हैं । हिंदी भाषा के वैश्वीकरण के लिए हिंदी के देवनागरीकरण का अभियान चलने का प्रस्ताव स्वागत योग्य है ।

मेरी शुभेच्छा है कि यह बुलेटिन हिंदी के वैश्विक रूप को परावर्तित करने का दर्पण बने और हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने में कृतकार्य हो । विश्व हिंदी समाचार के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।

शुभकामनाओं सहित,

आदेश कुमार पांडेय, राजभाषा अधिकारी, एनटीपीसी लिमिटेड, शक्तिनगर, सोनभद्र (उ.प्र.)

उत्तरी अमेरिका के हिंदी साहित्यकार:

श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी

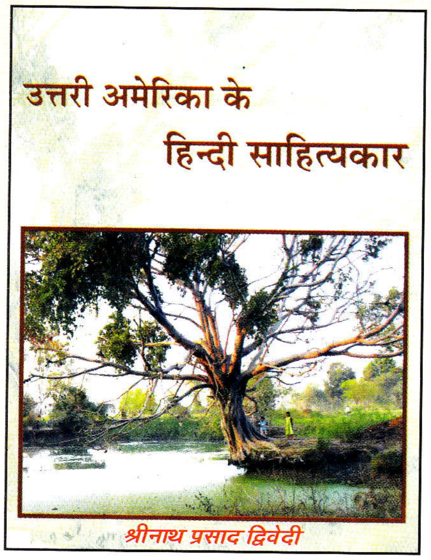

गत तीन दशकों में हिंदी साहित्य के सृजन और प्रचार-प्रसार की दिशा में उत्तरी अमेरिका में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है । संभवत: इसका प्रमुख कारण है-- हिंदी भाषियों का इस महाद्वीप में विपुल संख्या में आगमन । मेरी यह मान्यता है कि प्रवासी अपनी संस्कृति तथा परंपराओं का अक्षय भंडार अपने साथ लाते हैं और इस दृष्टि से हिंदी भाषी कोई अपवाद नहीं ।

सन् 1988 में कैनेडा के हिंदी कवियों का पहला संकलन - 'कैनेडिन काव्य धारा ' का संपादन मैंने किया था जिसमें देश के अनेक शहरों के 17 कवियों की चुनी हुई कविताओं के साथ रचनाकारों का परिचय भी सम्मिलित था । दूसरे काव्य संकलन - 'किंजल्क ' का संपादन डॉ. निर्मला आदेश ने किया था जो 1995 में प्रकाशित हुआ । इसमें मुझे छोड़कर टोरंटो महानगर के ही सभी कवियों की रचनाएं संकलित थीं । तीसरा संकलन 'प्रवासी काव्य ' का संपादन भारतेंदु श्रीवास्तव तथा श्याम त्रिपाठी ने किया था जो 1997 में छपा जिसमें टोरंटो के क्षेत्रीय कवियों की रचनाएँ थीं । सन् 2006 में चौथा संकलन-'रावी के अहसास फ्रेजर के तट पर ' का सह संपादन मैंने किया था । शायद वह विश्व में पहला प्रयोग था जिसमें ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के चुने हुए 37 हिंदी, पंजाबी, उर्दू और बंगला भाषा के कवियों की कविताएँ उनके परिचय के साथ, उनकी मूल भाषाओं एवं लिपियों में ही, प्रकाशित की गई थीं ।

हमारा लक्ष्य हिंदी का प्रचार-प्रसार मात्र नहीं अपितु इस महाद्वीप में हो रहे सृजनात्मक कार्यों को विश्व-हिंदी-जगत में उचित सम्मान और गौरव दिलाना भी है और यह तभी संभव होगा जब हम मिलकर कार्य करें । यह पहल, इस पुस्तक के प्रकाशन के रूप में, उस ओर बढ़ता मात्र एक कदम है ।

मैंने अपनी ओर से यह भरसक प्रयत्न किया है कि उत्तरी अमेरिका के उन 52 वरिष्ठ साहित्यकारों के कृतित्व को 'उत्तरी अमेरिका के हिंदी साहित्यकार ' नामक इस 224 पृष्ठों के संकलन के दायरे में समेट सकूँ जिनके साहित्य के संकलन प्रकाशित हो चुके हैं अथवा जिनकी रचनाएँ लंबे अरसे से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । जिन लोगों ने इस महायज्ञ में अपने सहयोग की आहुतियाँ दी हैं मैं उनका ऋणी हूँ । हो सकता है कि किन्हीं कारणों से किसी प्रतिभावान व प्रख्यात साहित्यकार की रचनाओं का समावेश इस संकलन में न हो सका हो, उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। यह सच मानिये कि मन में उनके प्रति कोई उपेक्षा या दुराग्रह का भाव नहीं है ।

उम्मीद है हिंदी के हस्ताक्षरों एवं हिंदी प्रेमियों को यह संकलन पसंद आयेगा । पाठकों से अनुरोध है कि कृपया अपनी प्रतिक्रिया भेजने में संकोच न करें ।

वितरक : चेतना प्रकाशन, पंजाबी भवन, लुधियाना (पंजाब), मूल्य : रु. 200 ●●

7.11.2008

महोदया,

विश्व हिंदी समाचार का अंक - 3 मिला । धन्यवाद ।

मॉरीशस एवं अन्य देशों में हिंदी से संबंधित गतिविधियों की जानकारी मिली ।

डॉ. वसन्त कुमार बनवारी तथा डॉ. अरविन बुलेल का विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के नए सदस्य के रूप में हार्दिक स्वागत है।

हिंदी दिवस के अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए आपने सही लिखा है कि ' हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ ही साथ बहुसंख्यक भारतीय समाज की संपर्क भाषा और विश्व भर में बसे हिंदी समुदाय की सांस्कृतिक प्रेरणा की भाषा है । '

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र की 'संपादकीय' में व्यक्त यह चिंता स्वाभाविक है कि 'हम संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों का समर्थन जुटाने में जितना विलंब करेंगे, हमें लक्ष्य तक पहुँचने में भी उतना ही विलंब होगा ।'अत: संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन जुटाने का सार्थक प्रयास करना चाहिए । '

समिति की मासिक पत्रिका 'राष्ट्रभाषा ' आपके पास नियमित भेजी जा रही है । इससे हिंदी संबंधित हमारी गतिविधियों की जानकारी आपको मिलती रहेगी ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

आपका,

अनन्तराम त्रिपाठी
प्रधान मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिंदीनगर, वर्धा ।

मॉरीशस में हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण

दीवार ढह गई

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध लेखक वेणीमाधव रामखेलावन के उपन्यास 'दीवार ढह गई ' का लोकार्पण माननीय धरमवीर गोकुल के कर कमलों द्वारा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फेनिक्स में अनेक गणमान्य विद्वानों की उपस्थिति में, हिंदी संगठन और आर्य उपदेशक मंडल के संयुक्त तत्वावधान में किया गया ।

'दीवार ढह गई ' का लोकार्पण करते हुए माननीय श्री धरम गोकुल ।
मंच पर बाईं ओर लेखक श्री वेणीमाधव रामखेलावन व दाईं ओर श्री अजामिल माताबदल

लोकार्पण समारोह में उपस्थित साहित्य अनुरागियों में माननीय धरमवीर गोकुल, डॉ0 जयप्रकाश कर्दम, भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव; डॉ0 विनोदबाला अरुण, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव; डॉ0 राजेंद्र प्रसाद मिश्र, उप महासचिव; श्रीमती अनिता अरोरा, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका; डॉ0 रूद्रसेन निऊर, आर्य सभा के उपप्रधान; डॉ: मुनीश्वर चिंतामणि, महात्मा गांधी संस्थान के पूर्व हिंदी अधिकारी; श्री राजेंद्र अरुण, रामायण केंद्र के संस्थापक; श्री अजामिल माताबदल, हिंदी संगठन के प्रधान; श्री भगवानदीन चुल्हन, आर्य उपदेशक मंडल के प्रधान; श्रीमती अंजू घरभरण, हिंदी संगठन की महासचिव प्रमुख हैं।

श्रीमती अंजू घरभरण ने इस लोकार्पण समारोह का बखूबी संचालन किया । उन्होंने लेखक का परिचय देते हुए कहा कि वेणीमाधव रामखेलावन जी हिंदी अध्यापक थे । क्रमश: पदोन्नति प्रप्त करते हुए सहायक निरीक्षक पद पर आसीन हुए । अनेक साहित्यिक कहानियों की रचना की और पाँच उपन्यास लिखे । सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान व हिंदी संगठन के प्रधान श्री अजामिल माताबदल ने लेखक की साहित्यिक यात्रा की चर्चा की । विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ0 विनोद बाला अरुण ने लेखक की मानवीय दृष्टि की चर्चा करते हुए करीब 50 साल पहले लिखे उनकी दो कहानियों - ' मोह भंग ' और ' महादान ' - का उल्लेख किया । भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव तथा प्रख्यात हिंदी लेखक डॉ0 जयप्रकाश कर्दम ने उपन्यास लेखन के परिश्रम की चर्चा करते हुए लेखक की सराहना की कि उन्होंने पाँच उपन्यास लिखने का गुरुतर कार्य किया है।

'दीवार ढह गई ' उपन्यास आर्य उपदेशक मंडल की संरक्षिता में स्टार पब्लिकशंस प्रा0 लि., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है । आकर्षक चित्र से चित्रित पक्की जिल्द में 200 पृष्ठ का यह उपन्यास विक्रय के लिए नहीं है, बल्कि हिंदी प्रेमियों में नि:शुल्क वितरण के लिए है ।

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के कुछ संस्मरण

उपर्युक्त शीर्षक से पिछले साल नवंबर महीने के अंतिम सप्ताह में नारायणपत दसोई की पहली पुस्तक ' पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के कुछ संस्मरण ' का विमोचन आर्यसभा के आर्य भवन में हुआ । इस साहित्यिक आयोजन के मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ0 जय प्रकाश कर्दम थे और इस पुस्तक का विमोचन उन्हीं के कर-कमलों द्वारा हुआ था । इसके अतिरिक्त मॉरीशस के दो प्रसिद्ध साहित्यकार रामदेव धुरंधर और डॉ0 बीरसेन जागासिंह ने पंडित वासुदेव विष्णुदयाल पर लिखी गई इस पुस्तक पर अपने बहुमूल्य विचार प्रकट किये । उल्लेखनीय है कि ये दोनों स्थानीय साहित्यकार विश्व हिंदी सम्मेलन के पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार हैं।

इनके अलावा डॉ0 (श्रीमती) सरिता बुधु ने अपने सुरम्य भाषण से इस साहित्यिक समारोह की श्रीवृद्धि की थी । यह पुस्तक पिछले साल अगस्त महीने में पोर्ट-लुई स्थित ग्लॉब प्रिंटिंग में छपकर प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का प्रकाशन और संपादन स्वयं नारायणपत दसोई ने किया है ।

'परिक्रमा 'और 'निबंध प्रदीप '

'हिंदी लेखक संघ ' तथा ' हिंदी साहित्य अकादमी ' के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि के दो निबंध संग्रहों - ' परिक्रमा ' और ' निबंध प्रदीप ' का लोकार्पण क्रमश: डॉ0 जयप्रकाश कर्दम, द्वितीय सचिव, भारतीय उच्चायोग तथा डॉ0 विनोद बाला अरुण,

डॉ0 जयप्रकाश कर्दम, द्वितीय सचिव, भारतीय उच्चायोग द्वारा 'परिक्रमा' का लोकार्पण

महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय के कर - कमलों द्वारा संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर हिंदी जगत के अनेक गणमान्य साहित्य प्रेमियों ने उपस्थित होकर डॉ0 चिंतामणि को शुभकामनाएँ प्रदान कीं । दोनों पुस्तकों का प्रकाशन 'स्टार पब्लिकेशंस, नई दिल्ली द्वारा हुआ है । प्रत्येक का मूल्य पचास रुपए है ।

पुस्तक लोकार्पण समारोह का संचालन महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मॉरीशस के रीडर डॉ0 हेमराज सुंदर ने किया ।

'सेवा आश्रम ' व 'कथा-संवाद '

19 नवंबर, 2008 को मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य समिति, इंदौर द्वारा मॉरीशसीय साहित्यकार श्री राज हीरामन की दो पुस्तकों 'सेवा आश्रम ' (कहानी-संग्रह) व 'कथा-संवाद ' (लघुकथा-संग्रह) का एक साथ विमोचन हिंदी कथाकार डॉ. सतीश दुबे ने किया । इंदौर की इस संस्था की नींव 1917 में महात्मा गांधी जी ने रखी थी ।

पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर श्री राज हीरामन के साथ अन्य विद्वानगण

इस अवसर पर श्री राज हीरामन को सम्मान-पत्र दिया गया और शॉल तथा श्रीफल प्रदान कर स्वागत किया गया । इसमें इंदौर के सभी मूर्धन्य साहित्यकारों व कथा-प्रेमियों ने भाग लिया । अपने वक्तव्य में श्री राज हीरामन ने मॉरीशस में स्थापित 'विश्व हिंदी सचिवालय ' की जानकारी भी दी । ●●

हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस

इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ

हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस की स्थापना 9 दिसंबर, 1961 का हुई थी और आज यह मॉरीशस की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है । यह पिछले 47 सालों से साहित्योत्थान के अंतर्गत अपने विस्तृत कार्यक्षेत्र के उद्देश्य को कार्यरूप देने के लिए पूरा प्रयत्नशील रहा है । लेखक संघ की स्थापना विशेषकर साहित्य सृजन के लिए हिंदी लेखकों को लेखन का मंच प्रदान करना, लेखन कार्यशालाएँ पहुँचे हुए साहित्यकारों के दिग्दर्शन में आर्याजित कर नवोदित लेखकों का लेखन में सही मार्गदर्शन करना, उनकी रचनाओं को परिमार्जित कर प्रकाशित करना व उन्हें साहित्य सृजन करने को प्रेरित करना है । लेखक संघ विभिन्न विधाओं जैसे कविता, कहानी, निबंध, लघु कथा, लोककथा, इतिहास तथा बाल साहित्य सृजन में पुस्तकें प्रकाशित करने हेतु समय- समय पर कार्यशालाएं करता रहता है । जिस विधा में हम पुस्तक छापने जाते हैं, प्रकाशन से पूर्व हम उस विधा में कार्यशाला आयोजित कर लेखकों को उस विधा के शिल्प, भाषा-शैली, उद्देश्य व लेखन कला से अवगत करा देते हैं ताकि वे उस ढाँचे में अच्छी रचनाएँ लिखकर प्रकाशनार्थ दे सकें । इस दिशा में हमें काफी सफलता मिली है और हमने देखा कि इस मार्गदर्शन के फलस्वरूप कई महत्वपूर्ण लेखक उभरकर आए हैं और सृजनात्मक-साहित्य में निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं ।

हिंदी लेखक संघ ने ' बाल सखा ' शीर्षक से पत्रिका का प्रकाशन सन् 1965 में किया था पर प्रकाशन की असुविधा के कारण कुछ अंक निकालने के पश्चात् यह कार्य रुक गया था । सन् 2006 से यह संस्था ' बाल सखा ' का पुनर्प्रकाशन कर रही है । लेखक तैयार करने का यह एक अच्छा माध्यम है । 'बाल सखा ' ने देश के अनेक लेखकों तथा लेखिकाओं को लिखने तथा उनकी रचनाओं को इसमें प्रकाशित करने का सुअवसर प्रदान किया है ।

लेखक संघ समय-समय पर निबंध, कहानी, कविता लेखन व पठन प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है और विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान करता है । यह कवि सम्मेलनों, संगोष्ठियों का भी आयोजन करता है । रेडियो-टी.वी. कार्यक्रमों में संघ के सदस्यगण भाग लेते रहते हैं । पहली बार सन् 1963 में मॉरीशस में नाटक प्रतियोगिता आयोजित कर नाटक मंचन व अभिनय की दिशा में भी पहल की गई थी ।

अभी हमारा बाल नाटक संग्रह छपकर आ रहा है और उसके बाद हम बड़ों के लिए नाटक संग्रह का प्रकाशन करेंगे । इन सब साहित्यिक गतिविधियों में लेखक संघ की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ रही हैं ।

लेखक संघ के लिए अति गर्व की बात यह है कि मॉरीशस के प्रथम प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति सर शिवसागर रामगुलाम सन् 1976 से लेकर देहावसान काल 1985 तक हिंदी लेखक संघ के मान्य प्रधान रहे । वे हमारे समारोहों में आते थे और हिंदी में भाषण देकर श्रोताओं का मन जीत लेते थे । ●●

युवा कवियों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करें :

डॉ. देवेंद्र दीपक

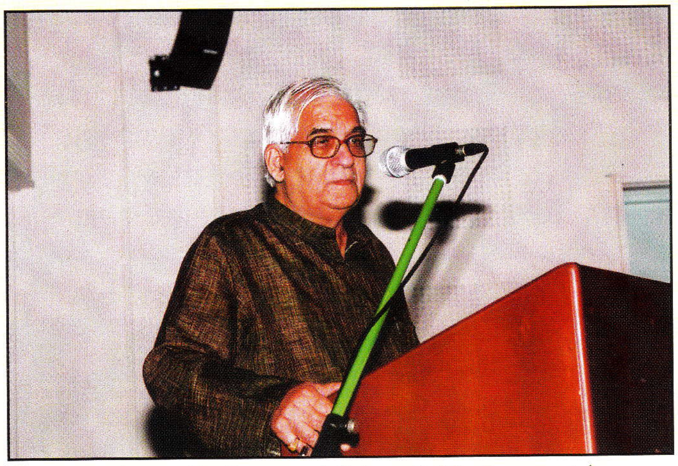

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भारत के निदेशक डॉ. देवेंद्र दीपक द्वारा संबोधन

भारत के वरिष्ठ कवि डॉ. देवेंद्र दीपक हिंदी संगठन, मॉरीशस के आमंत्रण पर 4 से 10 दिसंबर, 2008 के बीच मॉरीशस में थे । उनका आगमन भारत-मॉरीशस के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत हुआ था । डॉ. देवेंद्र दीपक की धर्मपत्नी उषा जी भी उनके साथ थीं ।

मॉरीशस आगमन पर डॉ. देवेंद्र दीपक का 5 दिसंबर, 2008 को हिंदी संगठन के सभाकक्ष में भव्य स्वागत किया गया । इस अवसर पर संगठन के प्रधान श्री अजामिल माताबदल एवं अन्य पदाधिकारियों तथा सदस्यों के मध्य भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. जयप्रकाश कर्दम भी उपस्थित थे ।

6 दिसंबर, 2008 को अपराह्न 1.30 बजे रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान के सभागार में डॉ. देवेंद्र दीपक की अध्यक्षता में एक कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि-सम्मेलन में अन्य गणमान्य व्यक्तियों के अलावा संगठन की संरक्षक लेडी पद्मा घरभरन उपस्थित थीं । इस संगोष्ठी में मॉरीशस के 25 जाने-माने कवियों के अलावा डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने भी अपनी कविता से श्रोताओं का मन जीत लिया । विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने हिंदी में अनूदित दो कविताओं का पाठ किया । समारोह प्रारंभ होने से पहले श्री अजामिल माताबदल ने संगठन की ओर से सभी का स्वागत किया । रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान की प्रभारी अधिकारी सुश्री सुचिता रामदीन ने हिंदी की स्थिति पर अपने विचार रखे । डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी ने भी संक्षेप में अपने उद्गार प्रकट किए ।

अपने वक्तव्य में डॉ. देवेंद्र दीपक ने स्थानीय कवियों की कविताओं की सराहना करते हुए कहा, 'मॉरीशस के युवा कवियों से काफी संभावनाएं हैं । वे हिंदी कविता को महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम हैं । ' उन्होंने हिंदी कविता की वर्तमान स्थिति पर भी प्रकाश डाला । उन्होंने स्थानीय युवा रचनाकारों के लिए काव्य-लेखन पर कार्यशालाएँ आयोजित करने का सुझाव दिया । संगठन ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया । समारोह का समापन डॉ. देवेंद्र दीपक के काव्य-पाठ से हुआ । काव्य- पाठ समारोह का संचालन महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ व्याख्याता श्री गुलशन सुखलाल ने किया ।

डॉ. दीपक ने भारतीय उच्चायुक्त श्री मधुसूदन गणपति और संस्कृति विभाग के स्थायी सचिव श्री फकीर से मुलाकात की तथा हिंदी की स्थिति और संभावनाओं पर चर्चा की । डॉ. देवेंद्र दीपक ने मॉरीशस में 1993 में आयोजित चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन में अपनी भागीदारी की अपनी स्मृतियों को ताजा करते हुए मॉरीशस के प्राकृतिक सौंदर्य तथा यहाँ की हिंदी जनता के आत्मीय प्रेम का उल्लेख किया ।

हिंदी संगठन, मॉरीशस की महासचिव श्रीमती अंजू घरभरन द्वारा अतिथियों का स्वागत

अपने मॉरीशस प्रवास के दौरान डॉ. देवेंद्र दीपक ने मॉरीशस रेडियो और दूरदर्शन पर भेंटवार्ताएं दीं और 'ज्ञान-सरोवर' कार्यक्रम में भाग लिया । डॉ. दीपक ने आर्य सभा, मॉरीशस द्वारा संचालित डी. ए. वी. कॉलेज के छात्रों के लिए 'समकालीन कविता ' पर एक व्याख्यान दिया और आर्य सभा, मॉरीशस के अध्यक्ष श्री सत्यदेव प्रीतम से भी विचार-विमर्श किया । डॉ. देवेंद्र दीपक विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यालय में भी गए और वहाँ के अधिकारियों से मिले।

डॉ. देवेंद्र दीपक के सारे कार्यक्रमों का संयोजन हिंदी संगठन की महासचिव श्रीमती अंजू घरभरन और कोषाध्यक्ष श्री लखनलाल मोतिया ने किया । ●●